सम सब घर शोभैं मुनि मन लोभैं रिपु गण छोभैं देखि सबै।
बहु दुन्दुभि बाजै जनु घन गाजैं दिग्गज लाजैं सुनत जबै॥
जहँ तहँ स्रुति पढ़हीं विघन न बढ़हीं जय यश मढ़हीं सकल दिशा।
सबई सब विधि क्षम बसत यथाक्रम देवपुरी सम दिवस निशा ॥41॥

शब्दार्थ—सम = समान ऊँचाई के। छोभैं = क्षोभ करते हैं, ईर्ष्या करते हैं। गाजैं = गरजते है। लाजैं = लज्जित हो जाते हैं। स्रुति = श्रुति, वेद। क्षम = समर्थ। दिवस-निशा = दिन-रात, सदैव।

प्रसंग—महर्षि विश्वामित्र अपने शिष्यों से अयोध्या नगर का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या—अयोध्या में सब घर समान ऊँचाई के बने हुए हैं जो बहुत ही शोभित हो रहे हैं और मुनियों के मन को वशीभूत कर रहे हैं, क्योंकि मुनि भी रूपत्व भव को ही चाहते हैं। इन सब घरों को देखकर शत्रु-समूह ईर्ष्यों करते हैं। यहाँ पर अनेक प्रकार के नगाड़े इतने जोरों से बज रहे हैं, मानो बादल गरज रहे हों। इनकी गर्जना को जब दिशाओं के हाथो सुनते हैं तो लज्जित हो जाते हैं, क्योंकि उनकी ग़र्जना नगाड़ों की ध्वनि के सामने फीकी पड़ जाती है। नगर में जहाँ-तहाँ ब्राह्मण वेदों का पाठ कर रहे हैं जिनके कारण नगर में विघ्न नहीं बढ़ते; अर्थात् विघ्नों का वेद-मन्त्रों के कारण प्रारम्भ में ही नाश हो जाता है। नगरवासी महाराज दशरथ की जय-जयकार कर रहे हैं जिसके कारण उनका यश सारी दिशाओं में—चारों ओर—छाया हुआ है। इस नगर के निवासी सब प्रकार से समर्थ हैं और उचित स्थान पर बसे हुए हैं, इसी कारण यह नगरी सदैव स्वर्गलोक की भाँति दिखाई पड़ती है।

अलंकार—अनुप्रास, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, उपमा।